भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 922
दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को उत्तरार्थ

आंध्र प्रदेश में फसलों का नुकसान

922. डॉ. बीसेट्टी वेंकट सत्यवती:

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि आंध्र प्रदेश के जिलों में अत्यधिक वर्षा और बाढ़ के कारण आठ लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में फैली फसलों को नुकसान पहुंचा है, जिसमें लगभग 3,000 करोड़ रूपए की फसल का नुकसान होने का अनुमान है;

(ख) यदि हां, तो क्या राज्य को इसके लिए कोई मुआवजा और वित्तीय सहायता प्रदान की गई है;

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है; और

(घ) सरकार द्वारा फसल पद्धति में परिवर्तन लाने के लिए क्या उपाय किए गए हैं, जिससे देश भर में जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलेगी?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क) से (ग): प्राकृतिक आपदाओं के मद्देनजर आवश्यक राहत उपाय प्रदान करने के लिए मुख्य रूप से राज्य सरकार उत्तरदायी है। राहत उपाय करने के लिए राज्य सरकार के पास राज्य आपदा मोचन निधि (एसडीआरएफ) के रूप में धनराशि उपलब्ध है। गंभीर प्रकृति की प्राकृतिक आपदाओं के लिए एसडीआरएफ के अलावा राष्ट्रीय आपदा मोचन निधि (एनडीआरएफ) से अतिरिक्त वित्तीय सहायता पर विचार किया जाता है और राज्य सरकार से प्राप्त एक ज्ञापन के आधार पर स्थापित प्रक्रियाओं के अनुसार इसे अनुमोदित किया जाता है, जिसमें एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल (आईएमसीटी) के दौरे के आधार पर आकलन शामिल है। वित्तीय सहायता में एक घटक के रूप में कृषि इनपुट सब्सिडी शामिल है जिसकी गणना 33% और उससे अधिक की फसल हानि वाले प्रभावित क्षेत्र के लिए की जाती है।

आंध्र प्रदेश राज्य सरकार को वर्ष 2022-23 के दौरान एसडीआरएफ के तहत 1252.80 करोड़ रुपये (केंद्रीय हिस्से के रूप में 940.00 करोड़ रुपये और राज्य के हिस्से के रूप में 312.80 करोड़ रुपये) आवंटित किए गए हैं। एसडीआरएफ के केंद्रीय हिस्से की पहली किस्त के लिए राज्य को 470.00 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है।

आंध्र प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत ज्ञापन के अनुसार, भारी वर्षा से 33% और उससे अधिक की फसल हानि वाला प्रभावित क्षेत्र 6928.13 हेक्टेयर है। गृह मंत्रालय द्वारा अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल (आईएमसीटी) का गठन किया गया था। आईएमसीटी ने वर्ष 2022 की बाढ़ से हुए नुकसान के मौके पर आकलन के लिए 10.08.2022 से 11.08.2022 तक आंध्र प्रदेश का दौरा किया और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है। निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुसार आईएमसीटी की रिपोर्ट पर राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की उप समिति (एससी-एनईसी) और बाद में, उच्च स्तरीय समिति (एचएलसी) द्वारा विचार किया जाता है।

(घ): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (एनआईसीआरए) परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए कई लचीली प्रौद्योगिकियों का विकास किया है। जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियां जैसे, सहय अंतर-फसलन प्रणाली, धान से अन्य वैकल्पिक फसलों जैसे दलहन, तिलहन, कृषि वानिकी प्रणाली, चावल की खेती के वैकल्पिक तरीके (चावल सघन प्रणाली, एरोबिक चावल, प्रत्यक्ष बीज वाले चावल) आदि के लिए फसल विविधीकरण का विकास किया गया है। उनके अपनाने के लिए इसे विकसित किया गया है तथा किसानों के खेतों में इनका मूल्यांकन किया है प्रमुख सहय अंतर-फसलन प्रणालियों ने पारंपरिक किसानों की पद्धतियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप जलवायु लचीला गांवों में 18% तक की पैदावार में सुधार हुआ है। पूर्वी भारत (विशेष रूप से ओडिशा में) में चावल-चावल से चावल-दाल (मूंग/काला चना) फसल प्रणाली को बढ़ावा दिया जाता है। किसानों के खेतों में बड़े पैमाने पर पारंपरिक रोपाई विधि के विकल्प के रूप में प्रत्यक्ष बीज वाले चावल (डीएसआर) का प्रदर्शन किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, एआईसीआरपी-एकीकृत कृषि प्रणाली (एआईसीआरपी-आईएफएस) के माध्यम से मौजूदा चावल-चावल फसल प्रणाली के लिए बेहतर उत्पादकता और लाभ वाली चावल-मूंगफली-मूंग, चावल-चारा लोबिया-चारा ज्वार, चावल-गेंदा-स्वीट कॉन और चावल- स्वीट कॉन-सब्जियों जैसे वैकल्पिक फसल प्रणालियों की पहचान की है। इसे किसानों के बीच लोकप्रिय करने के लिए पहचान की गई प्रणालियों को विकास एजेंसियों के साथ भी साझा किया जाता है। पश्चिम गोदावरी जिले के तराई वाले चावल क्षेत्रों के लिए 0.56 हेक्टेयर की एकीकृत कृषि प्रणाली भी विकसित की गई है, जिसमें फसलें, डेयरी, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन, फल और मशरूम शामिल है। किसान भागीदारी मोड में वैकल्पिक फसल प्रणालियों और एकीकृत कृषि प्रणालियों के प्रदर्शन में आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले में एकीकृत कृषि प्रणालियों पर एआईसीआरपी का ऑन-फार्म रिसर्च सेंटर शामिल है।

*****